'राष्ट्रप्रेम उत्सव' में महामहिम राज्यपाल
श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–**25.11.2016**, समय–अप॰ 05:15 बजे, स्थान–हंस ध्वनि थियेटर, प्रगति मैदान, नई दिल्ली)

'राष्ट्रप्रेम उत्सव' के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित माननीय सांसद श्री शांता कुमार जी, सांसद श्री अश्विनी कुमार चौबे जी, शिक्षाविद् डॉ॰ बी॰एन॰ मिश्रा जी, प्रख्यात रंगकर्मी श्री मुजीब खान जी, (जिनके निर्देशन में हमलोग आज 'स्वामी विवेकानन्द' नाटक का मंचन देखेंगे), प्रो॰ सुभाष चन्द्र राय जी, आई॰टी॰पी॰ओ॰ के सी॰एम॰डी॰ श्री एल॰सी॰ गोयल जी, उत्सव के संयोजक श्री नीरज कुमार जी, समारोह में उपस्थित मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों,

यह खुशी की बात है कि 36वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला–2016 के अवसर पर राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास द्वारा आयोजित ''स्वामी विवेकानंद'' नाट्य मंचन के माध्यम से जन–जन में स्वामी विवेकानंद के विचारों को पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। आज के कार्यक्रम में संगोष्ठी का निर्धारित विषय– ''सांस्कृतिक भारत के निर्माण में स्वामी विवेकानंद का योगदान'' निश्चित रुप से आधुनिक भारत के संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक है।

मित्रों, आधुनिक भारत के उत्थान में जितना योगदान स्वामी विवेकानन्द का है, उतना और किसी भी दूसरे का नहीं। स्वामीजी केवल ज्ञानी नहीं थे। उन्होंने सूक्ष्म–रूप से देश की भक्ति के लिए सब कुछ कहा है और सबसे अच्छी तरह कहा है। जातीय भेद, धर्म, मनुष्यता आदि साधारण विषयों तक उनकी गहन दृष्टि पहुँची थी। सेवा–धर्म सबसे पहले उन्हीं ने देश के सामने रखा। संगठन तो उन्होंने इतना दृढ़ किया कि आज सम्पूर्ण

भू–मण्डल उनकी आध्यात्मिकता की रश्मियों से बँधा हुआ है। वे जाति–भेद के प्रबल विरोधी थे।

स्वामी विवेकानन्द को भारतीय युवाओं पर अखण्ड विश्वास था। उन्होंने अनेक अवसरों पर युवाओं को संबोधित करते हुए भारत की गौरवमयी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाते हुए, उन्हें उत्साहित और प्रेरित किया था। स्वामी जी के शब्दों को मैं प्रस्तुत करना चाहता हूँ। उनके शब्द हैं–

''मेरे वीर–हृदय युवकों! यह विश्वास रखो कि अनेक महान कार्य करने के लिए तुम सबका जन्म हुआ है। उठ खड़े हो जाओ और कार्य करते चलो। उत्साह से हृदय भर लो और सब जगह फैल जाओ। काम करो, काम करो। नेतृत्व करते समय सबके दास हो जाओ, निःस्वार्थ हो जाओ। अनन्त धैर्य रखो, तभी सफलता तुम्हारे हाथ आएगी।''

स्वामी विवेकानन्द भारतीय किशोरों और युवाओं को ऐसी शिक्षा दिये जाने के हिमायती थे, जो उन्हें स्वाभिमानी, चरित्रावान, स्वावलम्बी और विवेकवान बनाती हो।

विवेकानन्द जी का स्पष्ट वक्तव्य है कि– ''जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन–संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्रा–बल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, वह भी कोई शिक्षा है क्या? हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्रा–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।''

स्वामी विवेकनन्द नारी–सशक्तीकरण के प्रबल पक्षधर थे। महिलाओं को वे साक्षात् माता जगत्–जननी के रूप में देखते थे। अपने व्याख्यान में एक जगह उन्होंने कहा है ''यदि इस देश का सम्पूर्ण साहित्य नष्ट हो जाय, वेदों का अस्तित्व लुप्त हो जाय,

कोई इतिहास न रहे, केवल सीता का नाम और उनका चरित्रा इसी तरह हम लोगों को याद रहे, तो हमारी कुछ भी क्षति नहीं हो सकती। उनकी महत्ता से हम फिर सब कुछ तैयार कर सकते हैं, वे ही हमारी माता हैं।''

आज का दिन संकल्प का दिन है– आइए! हम सब मिलकर इस पावन अवसर पर स्वामी विवेकानंद के पराक्रमी, प्रबुद्ध एवं पावन जीवन से प्रेरणा लेकर, मनसा–वाचा–कर्मणा राष्ट्र–प्रेम की भावना से ऊर्जान्वित होकर, सांस्कृतिक भारत के निर्माण में जुट जाएँ। यही समय की माँग है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक पुस्तक में कहा है कि– ''विवेकानंद वह सेतु हैं, जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं। स्वामी विवेकानंद वह समुद्र हैं, जिसमें धर्म और राजनीति, राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता तथा उपनिषद् और विज्ञान, सब–के–सब समाहित होते हैं।'' नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का कथन है कि– ''स्वामी विवेकानंद ने नयी पीढ़ी के लोगों में भारत के प्रति भक्ति जगायी, उसके अतीत के प्रति गौरव एवं उसके भविष्य के प्रति आस्था उत्पन्न की। उनके उद्‌गारों से लोगों में आत्म–निर्भरता और स्वाभिमान के भाव जगे हैं। भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रीयता पहले उत्पन्न हुई, राजनैतिक राष्ट्रीयता तो बाद में सामने आई। वस्तुतः इस सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के जनक स्वामी विवेकानंद ही थे।''

स्वामी विवेकानन्द प्रायः अपने संबोधन में कहा करते थे कि– ''Arise, Awake, and Stop not till the Goal is reached."

–अर्थात् उठो, जगो और तब तक न रूको, जब तक लक्ष्य न प्राप्त कर लो। स्वामी जी का यह संदेश हरेक भारतीय के

लिए आज भी असीम उत्साह और प्रेरणा का प्रकाश–पुंज बना हुआ है।

आइये, हम सभी 'राष्ट्रप्रेम उत्सव' के आज के कार्यक्रम में यह संकल्प लें कि हम स्वामी विवेकानन्द के सपनों के भारत के निर्माण हेतु हर संभव प्रयत्न करेंगे। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।